॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अप्रैल 2020 वर्ष 24, अंक 04 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2075-76 ❑ कुल पृष्ठ 20
ई-मेल:tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

टंकारा ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

मेरे ऋषि का जन्मकक्ष जैसा था वैसा ही बने

- आचार्य डॉ. देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात

टंकारा गुरुकुल परिसर को विश्वदर्शनीय बनाने में पूर्ण सहयोग

- श्री विजय रूपाणी, मुख्यमन्त्री गुजरात

ऋषि जन्मभूमि के नवीनीकरण हेतु दो करोड़ की घोषणा

- महाशय धर्मपाल जी, MDH द्वारा

आचार्य डॉ. देवव्रत जी राज्यपाल गुजरात एवम् श्री विजय रूपाणी जी, मुख्यमन्त्री गुजरात

ऋषि जन्मभूमि भवन में

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

समाज में गिरते नैतिक मूल्य

प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा आर्य समाज के उत्सव पर दिये प्रवचन के कुछ महत्वपूर्ण अंश

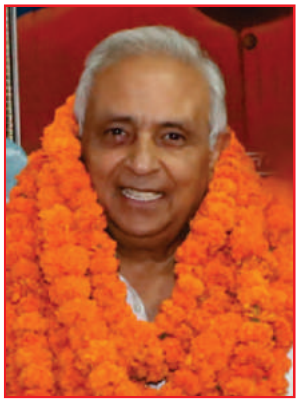

एक विशाल शिक्षण संस्थान के प्रधान सेवक होने के कारण बच्चों का भविष्य निर्माण करना और उन्हें चरित्रवान् बनाना मेरा दायित्व हैं। बच्चों के भविष्य निर्माण के साथ नैतिकता का पतन न हो, यह मेरा उद्देश्य है।

नैतिकता का अभिप्राय है वे मानवीय मूल्य जिनसे हम सिर उठाकर समाज में जीते हैं। वे जीवन-मूल्य हैं परस्पर सहयोग, मैत्री, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव, छोटों के प्रति स्नेह, बड़ों का सम्मान, आदि। इन सभी जीवन-मूल्यों के अभाव से मानव शरीर से तो मानव ही दिखता है, परन्तु आचरणों से वह एक निरा पशु सिद्ध होता है।

आज समाज में इन नैतिक मूल्यों में जो गिरावट आ रही है उसके प्रमुख कारण हैं पारिवारिक, शैक्षणिक और सामाजिक जीवन-मूल्यों का सर्वथा पतन होना। पारिवारिक जीवन-मूल्यों की गिरावट के कारण हैं, संस्कारों की कमी, माता-पिता का स्वयं पाश्चात्य रंग में रंगना, देर रात तक उसी परम्परा में रहना, बच्चों के सामने लड़ाई-झगड़े करना, बुजुर्ग मां-बाप की सेवा न करके उनसे दूर रहना, घर का सारा काम अथवा सेविका आया पर छोड़ देना, आदि।

शैक्षणिक जीवन-मूल्यों की गिरावट के कारण हैं अनुशासन का अभाव, शिक्षकों की कामचलाऊ मनोवृत्ति, गुरु या मार्गदर्शक का अभाव और आदर्श जीवन-शैली का न होना। इनके अभाव से आज नैतिकता का घोर पतन हो रहा है। सामाजिक जीवन-मूल्यों के भूपतित होने के कारण हैं चोरी, धोखा, बालात्कार, चलचित्रों में नंगापन, मीडिया, प्रचार के साधन, विज्ञापनों का बोल बाला, दूरदर्शन पर समाचारों में हिंसात्मक घटनाओं को बार-बार दर्शाना।

प्राचीन काल में जो संस्कार परिवार, विद्यालयों या आश्रम में दिए जाते थे (जैसे सुबह जल्दी उठना, बड़ों का अभिवादन करना, व्यायाम करना, अपना कार्य स्वयं करना, अध्यापकों का आदर, परिवार में प्रेम, पारस्परिक विश्वास आदि) आधुनिक समाज में वे सब गुम हो गए हैं।

आज के बच्चे सुबह बिस्तर पर चाय पीते हैं और उसके पश्चात् पाश्चात्य संगीत सुनते हैं। धार्मिक क्रिया-कलापों का उनके जीवन में समावेश ही नहीं है। इतना ही नहीं, माता-पिता स्वयं पाश्चात्य रंग में रंगे रहते हैं। बच्चों की तरफ उनकी जिम्मेदारी क्या है इसका अहसास उन्हें बिल्कुल नहीं होता। माता-पिता इतने अधिक व्यस्त हैं कि वे अपने बच्चों को स्वयं पढ़ाते नहीं हैं, ट्यूटर के द्वारा उनका पाठ्यक्रम निर्धारित होता है और खाना भी स्वयं न बनाकर महिला कर्मियों या गृह-सेवकों से बनवाते हैं। कुछ माता-पिता तो स्वयं बच्चों को रूपए देकर बाहर से खा लेने की सलाह देते हैं ताकि काम करने से बचना पड़े। इस नियति से बच्चे भ्रमित रहते हैं क्या करें और क्या न करें। अधिकांश बच्चे बाहर के खान-पान से स्वयं को रोक नहीं पाते और अत्यधिक मिर्च-मसाले के व्यंजनों से स्वयं को तमोगुण सम्पन्न बना लेते हैं, जिनका प्रभाव उनके शरीर के साथ साथ मन और बुद्धि पर भी पड़ता है।

अच्छे और सुसंस्कृत बच्चों का भी विद्यालयों में अभाव है। सुबह से शाम तक बच्चा जिन मित्रों के साथ व्यवहार करता है, उनकी संगति अच्छी है या बुरी, क्या यह परखना अभिभावक को जरूरी नहीं लगता? कुछ बच्चे घरों से पैसे चुराकर अपनी मर्जी से नशे, गुटखे का स्वाद चखते हैं और दूसरों को भी चखाते हैं। ऐसे वातावरण में बड़ों का सम्मान और आचार्य का आदर कहां तक संभव है?

आज के मानव को समय की पाबंदी की चिंता नहीं है। जिसने समय का महत्व नहीं जाना, उसका जीवन-मूल्य हमेशा के गिरा हुआ होता है। आज के बच्चों के जीवन में अनुशासन की कमी है। कोई समयसारिणी नहीं है कि कब सोना, कब पढ़ना, कब जागना, कब खाना और क्या खाना है? जब कोई कार्य समय पर नहीं होगा तो उसका परिणाम अच्छा कैसे होगा?

विद्यालय में शिक्षकों की काम चलाऊ मनोवृत्ति से भी बच्चे असुरक्षित रहते हैं। पाठ्यक्रम अधिक होने की वजह से शिक्षक बच्चों को नैतिकता का बोध नहीं करा पाते हैं और पाठ्यक्रम समाप्त कराने में ही व्यस्त रह जाते हैं। क्या सही है, क्या गलत इसका बोध बच्चों को नहीं हो पाता है। परिणाम स्वरूप बच्चे अनैतिकता के शिकार हो जाते हैं।

प्राचीन संस्कृत भाषा का वह सम्मान नहीं करता। अपना भविष्य बनाने के लिए वह विज्ञान और तकनीकी को चुनता है, अच्छा है। परंतु हमारी सांस्कृतिक धरोहर रामायण, गीता, उपनिषद्, वेद, आदि पर जरा भी विचार नहीं करता।

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ 'वेद' इसी भाषा में लिखे गये हैं। भारत में विभिन्न धर्मों के प्राचीन ग्रंथ संस्कृत भाषा पर ही आधारित हैं। इस भाषा का नाम ही इसके गुणों का वर्णन करता है। संस्कृत शब्द का अर्थ है परिमार्जित, संस्कारित, पवित्र। इसी कारण से इसे 'देवभाषा' भी कहा जाता है। संस्कृत अत्यंत सरल, सुबोध एवं सुललित भाषा हैं इसी भाषा के साहित्य में देशप्रेम, विश्वबंधुत्व, विश्व-भ्रातृत्व, सेवा, परोपकार, आदि अनेक विचार धाराएं आज भी इस भाषा के अध्येताओं को कदम-कदम पर प्रभावित करती हैं। महर्षि मनु का कथन था, 'इस भारत देश में उत्पन्न अग्रजन्माओं के उत्कृष्ट आचरणों से पृथिवी के सभी मानव अपने अपने चरित्र सुधारने की शिक्षा प्राप्त करें (मनुस्मृति 2.20)। इस कथन को हम कहां तक सफल बना पाते हैं, यह सभी रक्षणशील धर्मिकों के लिए एक चिंता का विषय बना हुआ है।

-स्थानीय सम्पादक द्वारा

रंग दो मुझे हंसराज के रंग में

परम पिता परमात्मा जब इन्सान बनाने बैठा,
सोचा इन्सान किस रंग में बनाऊँ ?
अगर गोरा बनाया, तो सब पर राज्य जमायेगा।
अगर काला बनाया, तो आजादी के लिए तरसता रहेगा।
अगर पीला बनाया, जिन्दगी भर डर में रहेगा।
अगर लाल बनाया, तो क्रोध करता रहेगा।
अगर नीला बनाया, तो गम में उदास रहेगा।
अगर हरा बनाया, तो दूसरों को देख जलता रहेगा।
भगवान, तो जो करता है अच्छा करता है।
मेरी एक प्रार्थना है, मुझे रंग दे ऐसा जैसा, रंगा तूने महात्मा हंसराज को-जिसमें सेवा का भाव, त्याग की भावना, इंसानियत और नेतिकता भरपूर भरी थी, दूसरों के दुख का दर्द महसूस होता था, जिस में प्यार ही प्यार था, उसे हर वस्तु में तू ही तू नजर आता था। प्रभु रंग दो मुझे उसके रंग में।
रंगो का त्योहार मुबारक हो !

पूनम सूरी, प्रधान, डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति

- रंगों के पवित्र त्यौहार होली की शुभकामनाएं कुछ इस प्रकार से प्रधान जी द्वारा दी गई

परमात्मा...?

एक ऋषि रेगिस्तान के ऊँट हांकने वाले राही से पूछ रहा है। ''तुम्हें किसने बता दिया कि परमात्मा है।''

ऊँट हांकने वाले ने कहा-कल-कल करते इनम मीठे झरनों ने मुझे बता दिया कि परमात्मा है। चारों तरफ रेत ही रेत है-तपती और झुलसती हुई-और पता नहीं यह मीठा पानी का स्त्रोत कहां से कैसे निकल आया। उस ऋषि ने और आगे पूछा-और किसने तुझे बताया कि परमात्मा है? उसने उत्तर देते हुए कहा इन आकाश के तारों ने बता दिया कि परमात्मा है। यह चारों ओर फैला हुआ समस्त अस्तित्व ही परमात्मा का सबसे बड़ा प्रमाण हैं।

परमात्मा एक अकथनीय रहस्यमय शक्ति है जो प्रत्येक वस्तु में व्याप्त है। उसे हम अनुभव करते है यद्यपि दिख नहीं रहा है। यह वह अदृश्य शक्ति है जो महसूस तो होती है परन्तु जिसका सबूत नहीं दिया जा सकता क्योंकि जो कुछ इन्द्रियों द्वारा जाना जा सकता है। उस सबसे भिन्न है। वह इन्द्रियों से परे है क्योंकि परमात्मा के अस्तित्व के बारे में कुछ हद तक ही तर्क-वितर्क किया जा सकता है। सामान्य मामलों में हम देखते हैं कि साधारण जनता नहीं जानती कि कौन क्यों और कैसे शासन करता है, किन्तु वे इतना अवश्य जानते हैं कि निसंदेह कोई शासक है। हर व्यक्ति अनुभव करता है कि ब्रह्माण्ड व्यवस्थाबद्ध है और एक अटल नियम है जो प्रत्येक जीव तथा वस्तु पर शासन कर रहा है।

यह नियम विवेक शून्य नहीं क्योंकि कोई भी ऐसा नियम प्राणि जगत के व्यवहार पर शासन नहीं कर सकता, और हमें विधान के आश्चर्य जनक अनुसंधान का कृतज्ञ होना चाहिए कि अब सिद्ध हो गया है कि जड़ जगत् में भी जीवन है। अत: वह नियम जो सर्व जीवन पर शासन करता है, परमात्मा है।

नियम और नियामक एक हैं। हम उसे मानें वा न मानें परन्तु इनके प्रचालन से बच नहीं सकते। जबकि विनम्र और मूक भाव से भगवान की सत्ता को स्वीकार करने से जीवन यात्रा आसान हो जाती है जैसे सांसारिक नियमों के पालन से जीवन सुगम हो जाता है। हम निश्चित रूप से अनुभव करते है कि जबकि हमारे चारों और प्रत्येक वस्तु निरन्तर रूप बदल रही और नाश हो रही है, किन्तु इस सारे परिवर्तन का आधार एक जीवित शक्ति है जो अपरिवर्तनशील है जो उत्पन्न करती है, विलीन करती है और पुन: उत्पन्न करती है। वह सत्ता वा शक्ति परमात्मा है और चूंकि जो कुछ भी हम केवल इन्द्रियों द्वारा देख सकते है चिरस्थायी नहीं है अत: केवल परमात्मा ही अटल है और यह सत्ता हितैषी है हमे इस हितैषी को ही समझना हैं क्योंकि हम देखते है कि मृत्यु के साथ जीवन, असत्य के साथ सत्य और अन्धकार के साथ प्रकाश जुड़ा रहता है। इसलिए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि परमात्मा जीवन है, सत्य है और प्रकाश है। वह प्रेम है। वह सर्वोच्च सत्ता है।

यह प्रमाण सब देशों के अनेक पैगम्बरों और मनीषियों के अनुभव में मिलता हैं। इस प्रमाण को अस्वीकार करना अपने आप को नकारना है। यह अनुभव अडिग विश्वास के पश्चात होता है। जो व्यक्ति भगवान के अस्तित्व को अपने अन्दर परखना चाहता है वह विश्वास द्वारा ही कर सकता है और चूंकि विश्वास स्वयं बाह्य (असंगत) प्रमाणों द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता, इसलिए निश्चित मार्ग है कि विश्व में नैतिक शासन में विश्वास किया जाए-अथवा सत्य और प्रेम के नियम में।

विश्वास का ठीक प्रयोग वहीं ही होगा जहां सत्य और प्रेम के विरूद्ध सब कुछ अस्वीकार करने का पक्का इरादा हो। मैं मानता हूं कि मैं युक्तियों द्वारा मनवा नहीं सकता वा सिद्ध नहीं कर सकता। विश्वास युक्तियातीत है। मैं इतना ही परामर्श दे सकता हूं कि असम्भव को सिद्ध करने की कोशिश मत करो। संसार में पाप क्यों है मैं इस प्रश्न का बुद्धि-संगत कारण नहीं बता सकता। इसलिए मैं नम्रता से मानता हूं कि पाप है और परमात्मा को सहिष्णु और धैर्यवान कहता हूं क्योंकि वह पाप सहन करता है। परन्तु यह भी सही है कि वह समय आने पर दण्ड द्वारा न्याय भी करता है। मैं समझता हूं कि उसमें कोई पाप नहीं है और जो संसार में है उसका वही ही स्त्रष्टा है मेरा यह विश्वास मेरे विनम्र और परिमित अनुभव से पक्का हो गया है। मैं जितना पवित्र बनने का प्रयत्न करता हूं उतना ही भगवान के निकट महसूस करता हूं। मैं उसके कितना ओर निकट हो सकूंगा जब मेरा विश्वास आज जैसा क्षमायाचक नहीं किन्तु हिमालय की भांति अंचल और उस पर बर्फ की भांति श्वेत हो जायेगा। इसी संदर्भ में कुछ विद्वानों के कहे वाक्य उद्धारण रूप में लिख रहा हूं।

यदि परमात्मा मार्ग दर्शक न हो तो मानव समाज पशुवत हो जाए। परमात्मा कल्पना ही नहीं है, वह अनुभव की जाने वाली वास्तविकता है।

कोई भी वैज्ञानिक कैसे कह सकता है कि प्राणी जगत इत्तफाक से ही उत्पन्न हो गया वा ब्रह्माण्ड में कहीं और जीवन नहीं है वा यदि है तो ऐसा ही होना चाहिए जैसा पृथ्वी पर है, ये केवल मन की निराधार कल्पनायें हैं-

इनमें निर्णकीयक तत्त्व कुछ भी नहीं। जीवन इत्तफाक तभी हो सकता है यदि सारा जगत इत्तफाक हो, संयोग से उत्पन्न व संयोग से संचालत। ऐसी बुल्बले की भांति क्षणिक कल्पना पर समय नष्ट करना व्यर्थ है।

मेरा विचार है कि कुछ सीमा के अन्दर हमें बुद्धिमत्ता वा मूर्खता से अथवा पुण्य वा पाप करने की स्वतन्त्रता है। तो भी एक अदृश्य हाथ, कोई मार्ग दर्शक दिव्य शक्ति है जो हमें जलमग्न चप्पु की भांति उन्नति की ओर प्रेरित करती है।

घोर अन्धेरे में, हे मेरे मित्र, तुम कौन हो जो मेरा हाथ पकड़ कर नेतृत्व करते रहते हो!

नेपोलियन ने एक रात तारों भरे आकाश को देखकर कहा कि कोई मुझे यह मानने को न कहे कि इस विशाल सृष्टि का बनाने वाला कोई नहीं है।

प्रत्येक व्यक्ति जो विज्ञान की खोज में गंभीरता से जुटा हुआ है मानने पर मजबूर हो जाता है कि प्रकृति के नियमों में एक महान आत्मा प्रकट है जो मनुष्य की आत्मा से बहुत अधिक उत्कृष्ट है जिस के आगे हम अपनी अल्प शक्तियों वाले दीन-हीन महसूस करते हैं।

अजय टंकारावाला

चले थे हम ऋषि के ऋण से उऋण होने

❒ आचार्य विजय भूषण आर्य एवम् डॉ. सुषमा आर्या

इस वर्ष जब हम महर्षि के जन्मस्थान टंकारा पहुँचे तो वहां का दृश्य देखते ही बनता था। आचार्य श्री यज्ञ ब्रह्मा के रूप में यजमानों को निर्देशानुसार आहुतियाँ दिला रहे थे और सभी उपस्थित जनसमूह उनके स्वर में स्वर मिलाकर स्वाहाकार कर वातावरण को गरिमामय बना रहे थे। दिल्ली से हम पचास की संख्या में सबके साथ टंकारा की यात्रा के लिए निकले। इंदिरा गांधी एयरपोर्ट से वडोदरा तक हवाई जहाज द्वारा और उसके बाद डीलक्स बस द्वारा टंकारा ऋषि दयानन्द के गीत गाते सायंकाल सन्ध्या वन्दन करते और वातावरण को संगीतमय बनाते हुए सभी जन बड़े उत्साह से महर्षि दयानन्द के जन्मस्थान के दर्शन करते हुए और शोभा यात्रा में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के जन्मस्थान के दर्शन करते हुए और शोभा यात्रा में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के गीत गाते और नारे लगाते हुए इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

इस सारे कार्यक्रम को सुन्दर और सुचारू रूप से चलाने वाले मेरे अभिन्न मित्र श्री अजय सहगल 'टंकारे वाले' थे। यज्ञ की व्यवस्था से लेकर ओ३म् ध्वजारोहण, शोभा यात्रा, भजन, सन्ध्या, प्रवचन, सायंकाल की सभा-सभी का सुन्दर संचालन करने वाले श्री अजय सहगल जी की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। सुबह का कार्यक्रम सम्पन्न हो तो मध्याह्न के कार्यक्रम की तैयारी और फिर सायंकालीन सभा की व्यवस्था में सभी को दिशा निर्देश देते हुए और स्वयं एक टाँग पर खड़े होकर मंच संचालन करना अजय सहगल जी की कर्मठता और लगन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसी के साथ विद्वानों का सम्मान करना, आगन्तुक अतिथितियों की सेवा में कोई कभी न रहे, इन सब बातों में निपुण अजय सहगल जी ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

जब हम प्रात: काल टंकारा पहुँचे तब अजय सहगल जी ने जिस प्रकार से डॉ. सुषमा आर्या एवं मेरा (विजय भूषण आर्य) का उपस्थित जन समूह को हमारा परिचय कराया और अंगवस्त्र से सम्मानित किया, वह दृश्य मुझे भूले नहीं भूलता। श्री अजय सहगल जिस तरह स प्रतिवर्ष स्वामी दयानन्द बोधोत्सव पर इस सारे कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हैं भगवान् से यही प्रार्थना है कि ये इसी प्रकार महर्षि की जन्म स्थली पर आर्यजनों को अपने कुशल संचालन द्वारा ऋषि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा लेने का अवसर प्रदान करते रहें और ऋषि ऋण से अऋण होने का सौभाग्य प्राप्त करते भी रहें तथा कराते भी रहें। आप सभी की जानकारी के लिए अब से 45 वर्ष पूर्व मैंने श्री अनिल आर्य, श्री अजय सहगल, ब्रह्मचारी राज सिंह और श्री विनय आर्य जो आयु में हम सबमें सबसे छोटे थे ने इकट्ठे ही ऋषि मिशन को सफल करने हेतु आर्य समाज की क्षेत्र में अपने आप को आर्य समाज के क्षेत्र में समर्पित करने का निर्णय लिया था।

सभी मित्र अपने-अपने जीवनोर्पजन कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी ऋषि मिशन को नहीं छोड़ा और अकस्माक इस वर्ष हम मित्र टंकारा की यज्ञशाला में उपस्थित हो गए और हम मित्रों को देख अजय जी अपने अन्तरात्मा के भावों को अधिक देर तक छुपा ना सके और सभी पुरानी यादों को स्मरण कराते हुए हमारा वंधन किया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि हम निरोग रहते हुए इसी प्रकार ऋषि मिशन से जुड़े रहे। -मो. 9810235912

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2020

के चित्रों को देखने और
डाऊनलोड करने के लिए
इंटरनेट के माध्यम से
www.facebook.com/ajaytankarawala
पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी ने मुझसे पूछा क्या तुम टंकारा गये? आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात

❒ मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द जन्मभूमि न्यास, टंकारा में आयोजित इस वर्ष के ऋषि बोधोत्सव पर्व के अवसर पर गुजरात राज्य के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री जी को आमंत्रित किया गया था। दोनों ही शीर्ष अधिकारी आयोजन में पधारे। ऋषि के अनन्य भक्त आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि आज हम यहां टंकारा में ऋषि दयानन्द जन्मभूमि में उपस्थित हैं। मुझे इससे पहले भी यहां सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने गुजरात का राज्यपाल बनने व कार्यभार ग्रहण करने के बाद अपनी पहली यात्रा टंकारा स्थित इस ऋषि की जन्मभूमि की ही की थी। मैं गुजरात का राज्यपाल बनने के बाद राष्ट्रपति जी और प्रधानमंत्री जी से भी मिला था। मैं जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से मिला तो उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं ऋषि दयानन्द जी जन्मभूमि टंकारा हो आया हूं? मैंने कहा कि हां, हो आया हूं। उन्होंने अपनी दूसरी चिन्ता कही। उन्होंने कहा कि आप ऋषि दयानन्द के प्रति अनन्य श्रद्धा रखते हैं। आप आर्यसमाज के दीवाने हैं। आपने ऋषि दयानन्द की महत्ता व गरिमा के अनुरूप उनकी जन्मभूमि नहीं बनाई? मैंने कहा कि इसका मुझे खेद है। आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द एक ऐसे महापुरुष हैं जो इस छोटे से गांव टंकारा में जन्मे थे। ऋषि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द सरस्वती से शिक्षा लेकर अपना सम्पूर्ण जीवन देश, धर्म और जाति के उत्थान के लिये समर्पित कर दिया। उन्होंने अनेक क्रान्तिकारियों को पैदा किया। ऋषि ने सामाजिक कुरीतियों के निराकरण के लिये आर्यवीरों को तैयार किया। पाठशालाओं तथा अन्य संस्थाओं की स्थापना की। नारी उद्धार, अछूतोद्धार आदि का महनीय काम किया। उन्होंने वेदों का उद्धार किया। ऋषि ने भारत के लोगों को वेदों से परिचित कराया। उनके समय व उनसे पूर्व देश में उनके स्तर का कोई महापुरुष नहीं था।

आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि यह स्थल हमारे लिये तीर्थ स्थल से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि यहां भी आवश्यक सुविधायें होनी चाहिये जिससे ऋषिभद्र यहां आकर एक या दो दिन रुक कर गुरु दयानन्द का स्मरण कर सकें। उन्हें यहां कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये। यहां पर सभी आगन्तुकों को सब प्रकार की सुविधायें उपलब्ध होनी चाहियें। आचार्य जी ने कहा कि आजकल युग बदल रहा है। ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि में ऋषि के जीवन से सम्बन्धित जो चित्र हैं, वह स्पष्ट दिखाई नहीं देते हैं। आचार्य जी ने कहा कि मैं मुख्यमंत्री जी को अपने साथ लेकर यहां आया हूं। आज मैं यहां आपके मध्य उपस्थित हूं। आचार्य जी ने ऋषि जन्मभूमि न्यास के अधिकारियों से निवेदन के शब्दों में कहा कि यह हम सबके गुरु की जन्म भूमि है। हमारे गुरु की जन्मभूमि विश्व के सभी महापुरुषों की जन्मभूमियों से अच्छी होनी चाहिये। हमें इस काम को करना है। इसके लिये धन का अभाव नहीं होगा। राजभवन में मेरे द्वार ऋषि के अनुयायियों के लिये हमेशा खुले हैं। आप मुझे जितना सहयोग करने के लिये कहेंगे, मैं उससे अधिक सहयोग करुगां। आचार्य जी ने कहा कि यदि ऋषि दयानन्द न होते तो मैं आज जो हूं, जिस रूप में हूं, वह कदापि न होता। हम सबको मिलकर उनका भव्य स्मारक बनाना चाहिये। ऋषि का स्मारक ऐसा बनना चाहिये जिससे भावी पीढ़ियां प्रेरणा ले सकें। आचार्य देवव्रत जी ने यह भी कहा कि ऋषि जन्मभूमि में ऋषिभद्रों और पर्यटकों के लिये आधुनिक व्यवस्थायें एवं सुविधायें होनी चाहियें।

गुजरात के राज्यपाल महोदय आचार्य देवव्रत जी ने डी.ए.वी. स्कूल एवं कालेज प्रबन्ध समिति के प्रधान यशस्वी श्री पूनम सूरी जी की ऋषि-भक्ति एवं भावनाओं की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि श्री पूनम सूरी जी के हृदय में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति गहरी श्रद्धा एवं निष्ठा है। उन्होंने बताया कि श्री पूनम सूरी जी ने मुझे कहा है कि टंकारा व राजकोट के मध्य एक डी.ए.वी. स्कूल व कालेज खोलेंगे। उस स्कूल की समस्त आय ऋषि जन्मभूमि न्यास, टंकारा को प्राप्त होगी। आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि प्रस्तावित डी.ए.वी. स्कूल व कालेज के लिए स्थान व अन्य सुविधायें गुजरात सरकार प्रदान करेगी।

आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि टंकारा में ऋषि दयानन्द का स्मारक भव्य व विश्वस्तरीय होना चाहिये। गुजरात सरकार इस कार्य में न्यास को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि महाशय धर्मपाल जी, एम.डी.एच. ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के निष्ठावान भक्त हैं और आर्यसमाज के भामाशाह हैं। वह 97 वर्ष की आयु में भी ऋषि के मिशन को पूरा करने के लिये तन, मन व धन से लगे हुए हैं। वह इस अवस्था में भी दिल्ली से टंकारा आये हैं। आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल-गुजरात राज्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनय आर्य जी की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि श्री विनय आर्य महात्मा धर्मपाल जी का ध्यान रखते हैं। राज्यपाल महोदय ने कहा कि आज महाशय धर्मपाल जी ने ऋषि दयानन्द जन्मभूमि न्यास, टंकारा को दो करोड़ रुपये की सहायता राशि दी है जिससे न्यास वा स्मारक को नवीन व भव्य रूप दिया जायेगा। आचार्य देवव्रत जी ने आगे कहा कि ऋषि दयानन्द जी के घर के पुराने स्वरूप को सुरक्षित रखना चाहिये। यहां जो स्मारक बने उसमें ऋषि के उस समय के घर को जैसा वह था, वैसा ही प्रस्तुत किया जाये। उसमें किसी प्रकार का आधुनिकीकरण व परिवर्तन नही होना चाहिये। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द के वर्तमान जन्म-गृह को देखकर उनके पुराने घर का अहसास नहीं होता। आचार्य जी ने कहा कि सरदार पटेल जी के जन्म गृह पर जो स्मारक बना है उसका रूप व स्वरूप उनके पुराने घर के जैसा ही है। उसमें किसी प्रकार का किंचित परिवर्तन नहीं किया गया है। आचार्य जी ने माण्डवी में ऋषि दयानन्द के शिष्य पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा जी के भव्य स्मारक का उदाहरण दिया और कहा कि उनके स्मारक स्थल पर उनके घर के स्वरूप से किसी प्रकार की छेड़छाड़ व आधुनिकीकरण नहीं किया गया है। पच्चीस लाख लोग पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा के उस भव्य स्मारक को देख चुके हैं। ऋषि दयानन्द के टंकारा में प्रस्तावित स्मारक में उनका घर वैसा ही बनाया जाये जैसा वह मूल रूप में था। इस स्मारक को देखकर दर्शक, ऋषिभक्त व पर्यटक यह अनुभव कर सकें कि ऋषि दयानंद के जीवनकाल में उनका रहन सहन कैसा था। कैसे उन दिनों लोग रहा करते थे। आचार्य देवव्रत जी ने महाशय धर्मपाल जी के कार्यों व भावनाओं की प्रशंसा की।

आचार्य देवव्रत जी ने महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी की भी प्रशंसा

की। उन्होंने उनकी पुण्य स्मृति को प्रणाम किया। आचार्य देवव्रत जी के व्याख्यान से कुछ समय पूर्व महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी के जीवन एवं कार्यों पर एक ग्रन्थ का विमोचन आचार्य जी के ही कर-कमलों द्वारा किया गया था। आचार्य देवव्रत ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनके जीवन पर प्रकाशित ग्रन्थ को लोकार्पण करने का सौभाग्य मिला। आचार्य जी ने दोहराया कि ऋषि दयानन्द जी का भव्य स्मारक ऋषि की जन्म-भूमि पर उनके गौरव के अनुरूप अवश्य बनना चाहिये।

आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि वह गुजरात राज्य से पूर्व हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल रहे हैं। अंग्रेजों ने वहां राजभवन का निर्माण कराया था। उन दिनों अंग्रेजों का अपने प्रकार का खानपान होता था। उन्होंने वहां पर एक मयखाना (मदिरालय या बार) बना रखा था। वह मयखाना पूर्व राज्यपालों का सहयोग करता रहा। मैंने उसे जड़-मूल से उखड़वाया और वहां पर एक यज्ञशाला का निर्माण कराया था। मेरे कार्यकाल में वहां प्रतिदिन यज्ञ होता रहा। आचार्य जी ने कहा कि उनके पिता आर्यसमाजी थे। वह दैनिक यज्ञ करते थे। घर के लोगों को नाश्ता व भोजन तब मिलता था जब सब यज्ञ कर लेते थे। आचार्य जी ने कहा कि हिमाचल व गुजरात के राज-भवनों में उन्होंने दुग्धपान के लिये गऊवें भी पाली हैं।

आचार्य देवव्रत जी ने श्रद्धा में भरकर विनम्र शब्दों में कहा कि मुझे अपने गुरु की जन्म भूमि में आने का अवसर मिला, यह मेरा सौभाग्य है। मैंने गुजरात राजभवन में यज्ञशाला बनवाई है। यज्ञशाला में दैनिक यज्ञ किया जाता है। राजभवन में गिर नस्ल की गाय को रखने की व्यवस्था भी कर दी है। आचार्य जी ने कहा कि हम अपने गुरु महर्षि दयानन्द का ऋण कभी नही चुका सकते। आचार्य जी ने आर्यसमाज के स्वर्णिम नियमों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के कुछ नियम तो संयुक्त राष्ट्र संघ के नियम होने चाहियें। आचार्य देवव्रत जी ने आर्य जनता का आह्वान करते हुए कहा कि अपने-अपने क्षेत्रों में वेदों की मशाल को बुझने मत देना। उन्होंने लोगों को युवा पीढ़ी को आर्यसमाज में लाने का प्रयास करने का भी आह्वान किया। उन्होंने आगे कहा कि पूरा विश्व एक परिवार है और इसे इस रूप में ही विकसित किया जाना चाहिये। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये आर्यसमाज को प्रयास करने चाहियें।

आचार्य जी ने कहा कि आर्यसमाज के नेतृत्व में अन्धविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलन चलना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि मैं टंकारा आया और यहां मुझे सब आर्यों के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। आचार्य जी ने न्यास की भव्यता में वृद्धि करने की अपील की। उन्होंने कहा कि यहां आकर ऋषि भक्तों को लगना चाहिये कि उन्हें टंकारा की यात्रा करके मजा आ गया। ऐसा अनुभव होने पर यहां हर वर्ष आर्यों की संख्या दोगुनी हो सकती है। आचार्य जी ने टंकारा न्यास को अपनी ओर से 11 लाख रुपयों की धनराशि दान दी। इससे पूर्व भी आचार्य जी ने एक प्रचार वाहन के लिये 11 लाख रुपये दान किये थे। आचार्य ही के व्याख्ययान को विराम देने के बाद राष्ट्रगान हुआ। इसी के साथ यह आयोजन व सभा समाप्त हुई।

-196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन-9412985121

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर-2020

नोएडा, उत्तर प्रदेश में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं में शारीरिक आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धान्तों, संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार निर्माण में अहम् भूमिका निभाने हेतु यह शिविर आयोजित हो रहा है। इस वर्ष का **राष्ट्रीय शिविर 7 जून से 14 जून 2020 तक एमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सेक्टर-44 नोएडा** में लगाया जायेगा। कृपया अधिक से अधिक वीरांगनायें शिविर में पहुँच कर इस अवसर का लाभ उठायें।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्ष
मो.09672286863	मो. 9810702760	मो. 9910234595	मो. 7289915010

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

मुख्य यज्ञशाला पर उपस्थित श्री सुनील मानकटला, श्री योगेश मुंजाल जी ट्रस्टी, श्रीमती निधि कपुर एवम् डॉ. सुकृति माथुर

श्री सुधीर मुंजाल ट्रस्टी, श्री महेश मुंजाल सपत्निक, श्री अरूण थापर, श्रीमती नीलम थापर एवम् डॉ. सुषमा आर्या

दिनांक 15 फरवरी से 21 फरवरी 2020 तक का सम्पूर्ण ऋषि बोधोत्सव पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। ऋग्वेद पारायण यज्ञ 15 फरवरी से टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। मुख्य यजमान मुंजाल परिवार के श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती अंजु मुंजाल, श्री लधाभाई पटेल आदि थे। पूरे सप्ताह आर्य जगत् के प्रसिद्ध गायक एवं भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक तथा डॉ. सुकृति माथुर एवं श्री अविरल माथुर (दिल्ली) के मधुर भजन प्रातः एवं सायं होते रहे।

19 फरवरी 2020 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिसमें भजन, कव्वाली, भाषण, लघु नाटिका इत्यादि सम्मिलित थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री अजय सहगल उप सचिव महर्षि दयानन्द सरस्वती टंकारा ने की और मुख्य अतिथि के रूप में श्री लधाभाई पटेल उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित के रूप में श्री रमेश मेहता (पूर्व स्नातक) ने सबकी उपस्थिति में अपार जन समूह व ब्रह्मचारियों की सराहना की।

दिनांक 20.02.2020 से प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक योग एवं स्वास्थ्य सत्र स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) के नेतृत्व में चलाया गया जिसमें असंख्य ऋषि भक्तों ने लाभ उठाया और इस सत्र को प्रतिवर्ष आयोजित करने का सुझाव भी दिया, तदुपरान्त प्रातः 6 बजे से प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें भारत भर के ऋषि भक्तों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। सभी बुजुर्ग और युवा बड़े उत्साह से इस यात्रा में प्रातःकाल भजन गाते टंकारा गांव की गलियों से गुजरते हुए निकले जो कि काफी प्रभावशाली रहा।

यज्ञ ब्रह्मा आचार्य रामदेव जी वरण करते श्री अरूण थापर, श्रीमती नीलम थापर एवम सुधीर मुंजाल जी ट्रस्टी

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल पुस्तिका विमोचन पर श्री नानक चन्द जी, पुस्तक के सम्पादक साथ में श्री सुनील मानकटला ट्रस्टी

दिनांक 20 फरवरी 2020 को प्रातः 8.30 बजे से यज्ञ वेदी पर

यज्ञशाला में उपस्थित वेदपाठी आचार्य रामदेव जी, साध्वी उत्तमायति जी, वैदिक विद्वान रामनिवास गुणग्राहक एवम् आचार्य इन्द्रदेव जी

यज्ञशाला में श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता सपत्निक, श्री अविरल माथुर व डॉ. सुकृति माथुर का अभिनन्दन

ऋषिबोधोत्सव के उद्घाटन समारोह के रूप में यज्ञ किया गया जिसमें श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती अंजु मुंजाल, श्री राजीव चौधरी, श्रीमती अमृतापाल, डॉ. सुकृति माथुर एवं श्री अविरल माथुर (दिल्ली)आदि मुख्य यजमान थे। इस अवसर पर ही डॉ. विनय विद्यालंकार (उत्तराखण्ड) द्वारा विशेष प्रवचन किया गया। इस अवसर पर श्री रघुनाथ राम आर्य, श्रीमती भानुबेन (भुज), डॉ. मेहश वेलाणी भुज, श्री मनमोहन आर्य देहरादुन, डॉ. विनय विद्यालंकार एवम् दिल्ली से पधारे श्री विजय भूषण आर्य एवं श्रीमती सुषमा आर्या आदि को सम्मानित किया गया।

दोपहर 1 बजे से 2.30 बजे तक साध्वी उत्तमायती की अध्यक्षता में 'महिला सशक्तिकरण एवं सम्मान आवश्यक क्यों?'' विषय पर महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती अरूणा सतीजा के संयोजकत्व में महिलाओं ने उपरोक्त विषय पर अपना प्रवचन दिया। पुरा पंडाल विशेषकर महिलाओं से भरा हुआ था। महिला सम्मेलन वर्ष 2019 से प्रारंभ किया गया था और यह वर्ष प्रतिवर्ष आयोजित किया जा रहा है।

अपराह्न 2.30 बजे से 5 बजे तक युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) द्वारा की गई। संयोजक के रूप में श्री देव कुमार, प्रधान, गुजरात आर्य वीर दल उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री रतन सिंह वेलाणी, मन्त्री, गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा एवं विशेष आमन्त्रित के रूप में श्री वाचोनिधी आर्य, श्री राजीव चौधरी एवं श्रीमती रीटा उपस्थित थे। इस अवसर पर सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबाल, प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन, उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों एवं द्वारा वर्तमान सामाजिक समस्मयाओं पर संदेशात्मक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र व बाहर से आने वालों को किराया दिया गया। इसी अवसर पर डॉ. मुमुक्षु जी द्वारा वेद पाठ की प्रतियोगिता रखी गई। इस सत्र के अन्त में पं. रमेश चन्द मेहता (पूर्व स्नातक टंकारा) ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देते हुए अपने टंकारा प्रवास के दिनों को याद कराते हुए अपने संस्मरण सुनाए।

सायंकालीन यज्ञ सायं 5 बजे से 7 बजे तक आयोजित किया गया। प्रात: एवं सायं यज्ञ के समय कई महानुभावों को टंकारा ट्रस्ट को दिए जाने वाले अभूतपूर्व योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

वेद प्रवचन एवं भक्ति संध्या सम्मेलन रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर जहां उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा ऋषि गुणगान के भजन प्रस्तुत किए गए, वहीं मुख्य रूप से डॉ. सुकृति माथुर एवं श्री अविरल माथुर जोकि दिल्ली से पधारे थे, के भजन हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री योगेश मुंजाल जी ने की और विशेष अतिथि के रूप में श्री लधाभाई पटेल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती भानुबेन आदि उपस्थित थे।

21 फरवरी 2020 को शिवरात्रि एवं बोधोत्सव का मुख्य कार्यक्रम रहा जिसमें प्रात: 9 बजे पूर्णाहुति का यज्ञ आरम्भ किया गया। इसमें मुख्य यजमान मुंजाल परिवार के श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती अंजु मुंजाल, श्री नीरज मुंजाल, श्रीमती चारू मुंजाल, श्रीमती निधि कपुर, श्री अनुज मुंजाल, रिंकल मुंजाल, श्रीमती आरती चौधरी, श्री महेश मुंजाल, श्रीमती नीलम थापर एवम् श्री लधाभाई पटेल आदि उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री सुधीर मुंजाल जी ने ब्रह्मा का वरण कर उन्हें तिलक लगाया एवं साथ ही वेदपाठियों का भी वरण किया। तदुपरान्त अग्निद्धान कर यज्ञ आरम्भ किया।

तदुपरान्त श्री अरूण थापर एवम् श्री नीलम थापर सभी की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद ग्रहण करते हुए ध्वजस्थल पर पहुँचे। जहां ट्रस्ट के वयोवृद्ध ट्रस्टी श्री लधाभाई पटेल ने ट्रस्ट की ओर से पगड़ी

यज्ञशाला में श्रीमती नैय्यर वसंत कुंज दिल्ली, श्री मनमोहन जी आर्य देहरादुन, श्री रामनिवास गुणग्राहक यमुना नगर, डॉ. विनय विद्यालंकार उत्तराखण्ड का अभिनन्दन

आर्य महिला सम्मेलन से पूर्व यज्ञ करवाते आचार्य रामेदव जी, मंच पर श्री राजीव चौधरी एवम् अरूणा सतीजा का अभिनन्दन करते श्री अरविन्द भट्ट ट्रस्टी, श्रीमती भानु वेन भुज

पहना कर उनका स्वागत किया गया तदपुरान्त भारत से आए हुए लगभग 150 प्रतिनिधि आर्य महानुभावों ने उन्हें इस अवसर पर मालाएं डालकर सम्मानित किया। श्री अरूण थापर ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद प्रकट किया और उनके द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर आर्य वीर दल टंकारा द्वारा ध्वजगीत गाया गया।

तदुपरान्त एक विशेष मंच से ओ३म् ध्वज लहराकर शोभायात्रा का आरम्भ श्री अरूण थापर एवम् श्रीमती नीलम थापर द्वारा किया गया। 1.30 घंटे तक लम्बी चली यह शोभायात्रा टंकारा के गलियों से होती हुई वापस टंकारा परिसर में ही उपस्थित हुई। इस शोभायात्रा में देश विदेश के ऋषि भक्त अपनी-अपनी संस्थाओं के बैनर लेकर उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए।

अपराह्न 3 बजे से 5 बजे तक ऋषि स्मृति समारोह का आयोजन श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में महामहिम डॉ. आचार्य देवव्रत (राज्यपाल गुजरात सरकार) एवं श्री विजय रूपाणी (मुख्यमन्त्री गुजरात सरकार) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पद्मभूषण महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच., प्रसिद्ध उद्योगपति) एवं श्री नानक चन्द (कोषाध्यक्ष, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति) उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री विजय रूपाणी, मुख्यमन्त्री गुजरात सरकार ने अपने वक्तव्य में कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जन्म भूमि पर पधारने का सौभाग्य मिला है। मैं आप सभी को विश्वास दिलाता हूं कि मैं सरकार की ओर से महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा को विश्वदर्शनीय बनाने के लिए पूर्ण सहयोग करूंगा। इसके साथ ही स्वामी दयानन्द जी की स्मृति में राजकोट टंकारा के बीच में डी.ए.वी. स्कूल आरम्भ करवाने का पूर्ण प्रयास करूंगा।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पधारे डॉ. विनय विद्यालंकार ने अपने वक्तव्य में टंकारा ट्रस्ट के व्योवृद्ध 96वें वर्षीय श्री रामनाथ जी सहगल जीवनपर्यन्त के प्रयासों के कारण ही आज ऋषि जन्मभूमि का विश्वभर में ऋषि भक्त गुणगान करते हैं। इस अवसर पर मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वामी विवेकानन्द पव्रिाजक को इस वर्ष सम्मानित किया गया। जिसमें 25000/- रूपये की मानराशि दी गई। आपने अपने वक्तव्य में प्रतिनिधि सभा का धन्यवाद करते हुए अपने जीवन के प्रारंभिक काल में अनुशाषित जीवन जीने की जो गुट्ठी जो माता-पिता द्वारा पिलाई गई उसी का कारण है कि आज मैं आपके सम्मुख एक संन्यासी के रूप में खड़ा हूं।

श्री नानक चन्द जी (कोषाध्यक्ष डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति) ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा-यह मेरा सौभाग्य है कि मुंजाल परिवार के कारण आज मैं उस ऋषि के जन्मस्थान पर उपस्थित हो सका। आज यहां महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी के जीवन पर आधारित कॉफी टेबल बुक जो कि मेरा सम्पादन में प्रकाशित हो, आज इस मंच से महामहिम राज्यपाल डॉ. देवव्रत जी (राज्यपाल गुजरात सरकार) के कर कमलो द्वारा हुई। महात्मा सत्यानन्द मुंजाल के विषय में आपने अपने विद्वता पूर्ण कम शब्दों में पूरे जीवन की रूप रेखा बांध दी। आपने कहा ''महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी एक गृहस्थी संन्सायी थे''।

श्री सुरेश चन्द्र आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि ''पूरे विश्व के ऋषि भक्तों को इस बात का हर्ष है कि डॉ. देवव्रत जी के आशीर्वाद एवम् सहयोग से एक विश्वस्तरीय जन्मभूमि का निर्माण अवश्य होगा।''

इस अवसर पर आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात सरकार के कर कमलों द्वारा श्री रघुनाथ राय आर्य (चण्डीगढ़), डॉ. महेश वेलाणी (भुज), श्रीमती भुनबेन (भुज), श्री अशोक कुमार आर्य (ज्योतिबा फूले नगर), श्री अशोक सहगल (शुद्धि सभा), मि. दार्शिल दाषा (आर्य वीर

(शेष पृष्ठ 19 पर)

इसी अवसर पर उपस्थित श्री अशोक सहगल राजेन्द्र नगर, स्वामी शान्तानन्द जी का स्वागत करते ब्रह्मचारीगण

टंकारा ऋषि बोधोत्सव

2020 की चित्रमय झांकी

मंच से अपना उद्‌बोधन देते स्वामी शान्तानन्द जी, श्री देवकुमार प्रधान गुजरात आर्य वीर दल एवम् साध्वी उत्तमायति

महिला सम्मलेन के चित्र

बोधोत्सव पर आयोजित खेल प्रतियोगिताएं, प्रश्नमंच एवम् मन्त्रोचारण प्रतियोगिता के विजेताओं को पारितोषित देते स्वामी शान्तानन्द जी, श्री राजीव चौधरी एवम् श्री वाचोनिधि आर्य

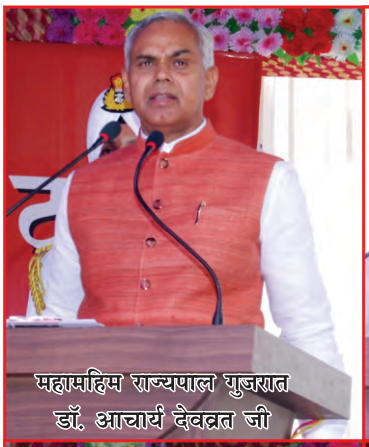

महामहिम राज्यपाल गुजरात
डॉ. आचार्य देवव्रत जी

मुख्यमन्त्री गुजरात
श्री विजय रूपाणी जी

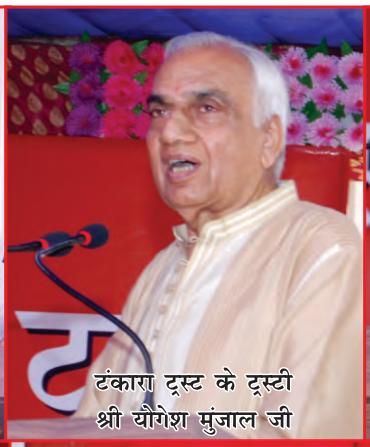

टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी
श्री यौगेश मुंजाल जी

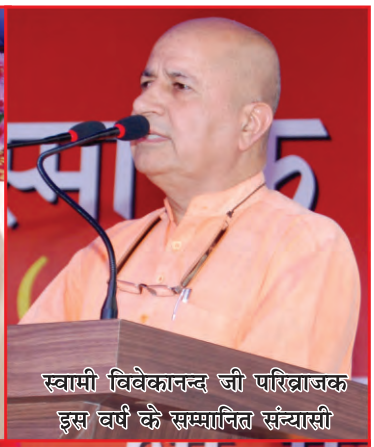

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक
इस वर्ष के सम्मानित संन्यासी

डॉ. सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान सार्वदेशिक सभा

श्री विनय आर्य
सहमन्त्री सार्वदेशिक सभा

बोधोत्सव पर मुख्य मंच पर दानवीर महाशय धर्मपाल जी का
करतल ध्वनि में मंच पर आगमन

राज्यपाल द्वारा सम्मानित होते स्वामी विवेकानन्द जी, श्री अशोक सहगल जी, श्री अशोक आर्य जी

राज्यपाल द्वारा सम्मानित होते प्रवीण भाई अजंता वॉच वाले, श्री भानु बेन, श्री रघुनाथ राय जी

राज्यपाल द्वारा सम्मानित होते श्री महेश वैलानी एवम् आर्य वीर दल भुज के आर्यवीर और वीरांगनाएं

मंच पर उपस्थित महाशय धर्मपाल जी एवम् राज्यपाल महोदय जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते श्री योगेश मुंजाल जी एवम् सुनील मानकटला

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी के पुस्तक का विमोचन करते राज्यपाल डॉ. आचार्य देवव्रत जी एवम् समस्त मुंजाल परिवार

ટંકારામાં શ્રદ્ધા-ભક્તિભર્યો ઋષિબોધોત્સવ

રમેશચન્દ્ર મહેતા

ગુજરાતના મહામહિમ રાજ્યપાલ આચાર્ય શ્રી દેવવ્રતજી અને મુખ્યમંત્રી શ્રી વિજય રૂપાણીજીની ઉપસ્થિતિમાં ઋષિજન્મભૂમિ ટંકારામાં ઉજવાયો ઋષિબોધોત્સવ.

વિશ્વપ્રસિદ્ધ એમ. ડી. એચ. મસાલાના સ્વામી મહાશય ધર્મપાલજીની ઉત્સાહવર્ધક હાજરી.

૨૧મી ફેબ્રુઆરી ૨૦૨૦ના દિવસે સમસ્ત આર્યજગતના શ્રદ્ધાકેન્દ્ર મહર્ષિ દયાનન્દજીના જન્મસ્થાન ટંકારામાં શ્રદ્ધા-ભક્તિર્ભાભર્યાવાતાવરણમાં ઋષિબોધોત્સવની ઉજવણી થઈ. ગુજરાતના યશસ્વી મુખ્યમંત્રી શ્રી વિજય રૂપાણીજીએ મહર્ષિને શ્રદ્ધાંજલિ આપતા કહ્યું કે મહર્ષિજીની જન્મભૂમિમાં આવીને ધન્યતા અનુભવું છું. આજ ટંકારાની ધરતીપર આર્યસમાજ જેવી અન્ધવિશ્વાસ નિવારક અને વેદોદ્ધારક, ક્રાનિતિકારીઓની જન્મદાત્રી સંસ્થા આર્યસમાજના સંસ્થાપક મહર્ષિ દયાનન્દજીનો જન્મ થયો હતો. દયાનન્દજીના જીવનમાં શિવરાત્રીનું વિશેષ સ્થાન રહ્યું છે. તેમણે રોગના મૂળનું નિદાન કરીને લારો આપ્યો કે વેદ તરફ પાછા વળો. મુખ્યમંત્રીજીએ કહ્યું કે ઋષિની પ્રેરણાથી જ સ્વામી શ્રદ્ધાનન્દજી, શ્યામજી કૃષ્ણ વર્મા અને લાલા લાજપતરાયજી જેવા અધ્યાત્મ અને રાષ્ટ્ર ધર્મનું પાલન અને પ્રચાર કરવાવાળા મહાપુરુષોએ પોતાનું સર્વસ્વ હોમી દીધું છે. ઋષિનું વિધવા વિવાહને ઉત્તેજન, દલિતોદ્ધાર જેવા ક્ષેત્રોમા અવિસ્મરણીય કાર્ય છે.

રાજકોટ અને ટંકારાની વચ્ચે હાઈવે પર ભારતની સહુથી મોટી શિક્ષણ સંસ્થા ડી. એ. વી. મેનેજીંગ કમિટીને ગુજરાતના બાળકોમાં અર્વાચીન અને પ્રાચીન સંસ્કૃતિનો સમન્વય જાળવતી ડી. એ. વી. સ્કૂલ અને કૉલેજના નિર્માણ માટે ગુજરાત સરકાર તરફથી જમીન આપવાની વ્યવસ્થા કરવામાં આવશે.

ભારતમાં ગુજરાતનું સ્થાન પ્રગતિશીલ રાજ્ય તરીકેનું છે. દેશ-વિદેશ સાથે વ્યાપાર સાથે સંકળાયેલું છે. એટલે જ ટંકારાને યાત્રાધામ તરીકે વિકસાવવા માટે રાજય સરકાર ધ્યાન આપશે અને તે માટે ધનની કમી નહીં રહેવા દેવાય.

ગુજરાતના મહામહિમ રાજ્યપાલ અને ઋષિભકત આચાર્ય દેવવ્રતજીએ પોતાના ઉદ્બોધનમાં કહ્યું કે ગુજરાતના રાજ્યપાલનો પદભાર સંભાળ્યા પછી જ્યારે દિલ્હી ગયો ત્યારે વડાપ્રધાન શ્રી નરેન્દ્ર મોદીએ મને પુછ્યુ કે ટંકારા જઈ આવ્યા? ટંકારા જેવા નાનકડા ગામમા જન્મેલ વિભૂતિના વ્યકતિત્ત્વને અનુરૂપ સ્મારક ત્યાં બનવું જોઈએ. મહામહિમે ટંકારા ટ્રસ્ટના ટ્રસ્ટિઓને સંબોધતા કહ્યું કે ટંકારા આપણા બધાના ગુરુની જન્મભૂમિ છે. આપણા ગુરુની જન્મભૂમિનું વાતાવરણ અને તેની વ્યવસ્થા વિશ્વના બધા મહાપુરુષોના જન્મસ્થાન કરતા વિશિષ્ટ હોવી જોઈએ. એમાં ધનનો પ્રશ્ન આડે ન આવવો જોઈએ. જન્મસ્થાનના પુનરોદ્ધાર માટે જે પણ કરવું પડતું હોય પુરુષાર્થ કરવો જોઈએ. મારા તરફથી જે કોઈ સહયોગની જરૂર પડે, મારી પાસે આવો. આર્યો માટે મારા દરવાજા ખુલ્લા છે. આચાર્યજીએ એમ પણ કહ્યું કે ઋષિ દયાનન્દનું સ્મારક તેમના વ્યક્તિત્ત્વને અનુરૂપ ભવ્ય અને વિશ્વસ્તરીય હોવું જોઈએ. ગુજરાત સરકાર આ કાર્ય માટે સંપૂર્ણ સહયોગ આપશે. આર્યશ્રેષ્ઠી ભામાશાહ એમ. ડી. એચના સ્વામી આજે ૯૭ વર્ષની વયમાં પણ ઋષિ પ્રત્યેની શ્રદ્ધાને કારણે ટંકારા આવ્યા છે અને જન્મસ્થાનના પુનરોદ્ધાર અને સૌન્દર્યકરણ માટે બે કરોડ રૂપિયા આપવાની જાહેરાત કરી છે. મારી ઇચ્છા છે કે જન્મગૃહ મૂળ જેવું હતું તેવું ફરીથી બનાવવું જોઈએ. જેવી રીતે સરદાર પટેલ, શ્યામજી કૃષ્ણ વર્માના સ્મારક બન્યા છે તેવું સ્મારક બનવું જોઈએ જેને જોઈને લોકોને પ્રેરણા મળે. જન્મસ્થાનમાં ઋષિ દયાનન્દજીના જન્મસમયનું વાતાવરણ, પહેરવેશ આદિની ઝાંખી મળવીજોઈએ. આચાર્ય દેવવ્રતજીએ ટંકારા ટ્રસ્ટના પ્રધાન સ્વ. મહાત્મા સત્યાનન્દ મુંજાલે ટ્રસ્ટ માટે તન-મન-ધનથી આપેલ સહયોગની પણ ખૂબ ખૂબ પ્રશંસા કરી.

આચાર્યજીએ કહ્યું કે જ્યારે હું હિમાચલના રાજ્યપાલ તરીકે ગયો તો ત્યાં રાજભવનમાં બ્રિટીશ કાલીન મદિરાલય હતું તેના સ્થાને યજ્ઞશાળા બનાવડાવી અને રોજ યજ્ઞ થવા લાગ્યો. અહીં ગુજરાતના રાજભવનમાં પણ યજ્ઞશાળા બનાવડાવી છે સાથે સાથે ગોપાલન કરું છું, હું ઇચ્છું છું કે હજુ મોટી સંખ્યામાં આર્યો ટંકારા આવે અને નવા સંકલ્પ અને પ્રેરણા લઈને જાય.

આ પ્રસંગે ચંડીગઢથી પધારેલ શ્રી રઘુનાથ રાયજી, ભૂજથી પધારેલ શ્રી મહેશભાઈ અને શ્રીમતિ ભાનુબહેન, અમરોહાના ડૉ શ્રી અશોક આર્ય તથા શ્રી દર્શનદાસ, પ્રસિદ્ધ અજંટા ઘડિયાલના સ્વામી શ્રી જ્યસુખભાઈ વિગેરેનું સમ્માન કરવામાં આવ્યું. આચાર્ય દેવવ્રતજીના સંબોધન પહેલા આર્યજગતના કર્મઠ, વિદ્વાન અને પ્રચાર-પ્રસાર માટે સમર્પિત સંન્યાસી સ્વામી વિવેકાનન્દજી પરિવ્રાજકનું સ્વામી સંકલ્પાનન્દ સ્મૃતિ પુરસ્કારથી સમ્માન કરવામાં આવ્યું. પ્રત્યુત્તરમાં સ્વામી વિવેકાનન્દજીએ કહ્યું કે મારો જન્મ એક આર્ય પરિવારમાં થયો છે. ૮૦-૯૦ વર્ષથી પરિવારમાં દૈનિક સંધ્યા યજ્ઞની પરમ્પરા ચાલે છે. મારા પરિવારમાં છથી ચાર જણાએ સંન્યાસ લીધો છે તો પંદર જણા વેદ પ્રચારમાં સક્રિય છે. મારા માતા-પિતા પાસેથી જે સંસ્કાર મળ્યા છે મેં તો તેનું ઋણ ઉતારવાનો પ્રયાસ કર્યો છે.

ઋષિ બોધોત્સવ દિવસોમાં ટ્રસ્ટ પરિસરમાં આવેલ યજ્ઞશાળામાં સવારે પાંચથી છ દરમ્યાન ગુરુકુલ ભવાનીપુર (કચ્છ)ના વૈદિક વિદ્વાન સ્વામી શાંતાનંદજીના સાન્નિધ્યમાં યોગશિબિરનું સંચાલન થતું હતું. મોટી સંખ્યામાં ઋષિભકત બહેનો અને ભાઈઓએ તેનો લાભ લીધો હતો. યુવા સમ્મેલનની અધ્યક્ષતા પણ સ્વામી સંકલ્પાનંદજીએ કરી હતી.

યુવા સમ્મેલનના અધ્યક્ષ સ્થાનેથી સ્વામીજીએ સંદેશ આપતા કહ્યું હતું કે એ જરૂરી છે કે માતા-પિતા પોતાના સંતાનોના શિક્ષણ ઉપર જેટલું ધ્યાન આપે છે તેટલું જ ધ્યાન શારીરિક અને બૌદ્ધિક વિકાસ ઉપર પણ આપે. અત્યારે પોકેટ મની અને મોબાઈલ સંતાનોને આપીને તેનો ઉપયોગ

કેવો થાય છે તે દિશામાં પણ ધ્યાન આપવું એટલું જ જરૂરી છે. સંતાનોને આર્યવીર દળની શાખાઓમાં અને આર્યસમાજના સત્સંગોમાં મોકલવા જોઈએ, જેથી વૈદિક સંસ્કૃતિથી પરિચીત રહે. અત્યારે સંતાનોને સારી નોકરી મળી રહે તેનું ધ્યાન રાખીને ભણાવાય છે. આ યોગ્ય નથી. સંતાનોને નોકર નહીં સ્વામી બને તેવા યોગ્ય બનાવો. વિદ્વાન બનાવવા માટે ગુરુકુલોમાં ભણાવો. મુસલમાન માતા-પિતામાં પોતાના ધર્મ પ્રત્યે જેટલી જાગૃતિ છે તેટલી આપણામાં નથી એ મોટું દુર્ભાગ્ય છે.

આગળ ચાલતા સ્વામીજીએ કહ્યું કે સ્વામી દયાનન્દે જીવનના પ્રત્યેક ક્ષેત્રમાં કામ કર્યું છે, આપણા સંતાનોને ઋષિ દયાનન્દજીના જીવનમાંથી પ્રેરણા મળે તે માટે ઋષિનું જીવનચરિત્ર વંચાવવું જોઈએ. માતા-પિતાએ સંતાનોમાં પાંચ મુખ્ય વાતો ઉતરે તેનું ધ્યાન રાખવું જરૂરી છે.

૧ – ઈશ્વરનું ધ્યાન ધરવું.

૨- યજ્ઞનું અનુષ્ઠાન કરવું.

૩- વેદોનો સ્વાધ્યાય કરવો અને વેદજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવું.

૫ – દેશ હિત માટે સમર્પિત થવા તૈયાર રહેવું.

ઋષિબોધોત્સવ પર્વે દરવર્ષ એક વેદનો પારાયણ યજ્ઞ થાય છે. આ વર્ષે પણ મહર્ષિ દયાનન્દ ઉપદેશક વિદ્યાલય ટંકારાના વિદ્વાન આચાર્ય રામદેવજીના બ્રહ્મત્વમાં સામવેદ પારાયણ યજ્ઞ યોજાયો હતો. આચાર્યજીએ ઉપદેશ આપતા કહ્યું હતું કે પરમાત્માનું બીજું નામ પૂર્ણ છે. ઈશ્વરના જ્ઞાન, બળ અને ક્રિયાઓ સ્વાભાવિક છે. આપણને જે સુખ અને દુ:ખ મળે છે તે આપણે કરેલા શુભાશુભ કર્મોનું ફળ છે. યજ્ઞ કરવાથી સુખ મળે છે. આપણે જીવનમાં સર્વત્ર સુખાકારી માટે ઋતુ અનુસાર જડી બુટ્ટિઓ અને વનસ્પતિઓના સંયોજનથી બનાવેલી હવન સામગ્રી અને દેશી ગાયના ઘીથી હવન કરવો જોઈએ. ગાયના ઘીનો એક ગુણ ઝેરનો નાશ કરવાનો પણ છે.

બોધોત્વના દિવસોમાં સમય સમયે પં. સત્પાલ પથિકજી અને સુકીર્તિ માથુરના ભાવવિભોર ભજનોનો લહાવો પણ મળ્યો. અધ્યાત્મ ભકિત અને દેશપ્રેમ સભર ગીતોનો અદ્‌ભૂત સંગમ હતો.

ટંકારાના આ ઋષિબોધોત્સવની વિશેષતા એ હતી કેટલાક ઋષિભકતો ટ્રેનની અનુકૂળતાને કારણ ત્રણ-ચાર દિવસ વહેલા પહોંચી ગયા હતા. તેમાંના કેટલાક તો મધ્યરાત્રીએ પહોંચ્યા હતા. તેમ છતા ગુરુકુલના બ્રહ્મચારિઓ દરેકને માટે વિશ્રામ આદિની વ્યવસ્થા કરી આપતા હતા, જેમને ભોજન કરવું હોય તેમના માટે ભોજનની વ્યવસ્થા પણ કરી આપતા હતા. ઉપરાંત સવારે નહાવા માટે ગરમ પાણી પણ યાત્રીઓને તેમના ઉતારાના સ્થાને મળી રહે તેનું પણ ધ્યાન રાખતા હતા.

આવા સુખદ્ પ્રસંગે એક વ્યકિતની ખોટ દેખાતી હતી. ટ્રસ્ટના ટ્રસ્ટી અને ગુજ. પ્રા. આ. પ્રતિનિધિ સભાના મંત્રી શ્રી હસમુખભાઈ પરમારની. ઉત્સવની તેયારીઓ પાછળ તેમનું માર્ગદર્શન મહત્ત્વનું રહેતું હતું. હા, તેઓએ જે વૃક્ષ વાવ્યુ છે તેના ફળ આર્યજગતને જોવા મળ્યા. તેમના હાથ નીચે આર્યવીરદળ ટંકારામાં તૈયાર થયેલ શ્રી દેવકુમાર અને શ્રી મહુલકુમારે તેમની ખોટ ન પડે તે જોવા ખૂબ ખૂબ પરિશ્રમ કર્યો હતો. રાજકોટથી લઈને મોરબી વચ્ચેના હાઈવે પર ચોક્કસ અંતરે ઋષિબોધોત્સવ, પધારનારા વિશિષ્ટ મહાનુભાવોના સ્વાગત માટેના બેનર તૈયાર કરાવીને લગાવડાવવા વિશેષ દૃષ્ટિ અને પડકાર માંગી લે તેવા કાર્ય હતા, બંને આર્યવીરોએ પડકાર ઉપાડીને સફળતા પૂર્વક પાર પાડ્યો હતો. દરવર્ષે યોજાતી વૉલીબોલ ટુર્નામેન્ટ અને પ્રશ્નમંચનું આયોજન પણ જવાબદારી અને સફળતા પૂર્વક ઉપાડી લીધું હતું. આમ શ્રી હસમુખભાઈને તેમણે રચનાત્મક શ્રદ્ધાંજલી આપી છે.

આ વખતે મોરબીના કલેકટર સાહેબે આપેલ સહયોગને પણ ભૂલી શકાય તેમ નથી. તેમના સહયોગને કારણે યાત્રિઓને મુશ્કેલી ન પડે તે માટે રસ્તાઓનું રીપેરીંગ યુદ્ધના ધોરણે થઈ ગયું હતું. તેમના નિર્દેશને કારણે ઋષિભકતોની સુવિધા માટે મોરબી અને વાંકાનેર નગર પંચાયતોમાંથી મોબાઈલ શૌચાલય ઉપલબ્ધ થયા હતા તો પાણી પુરવઠા વિભાગ તરફથી પાણીનો પુરવઠો પુરતો મળી રહે તેનું ધ્યાન રાખવામાં આવ્યું હતું.

ઋષિબોધોત્સવ દિવસના સહુથી મોટો પ્રસંગ તો ત્યારે ઉજવાયો જ્યારે ઋષિના જન્મગૃહમાં જન્મગૃહનો પુનરોદ્ધાર માટે પ્રાચીન અને અર્વાચીન કાર્યપદ્ધતિનો સમન્વય કરીને વિશ્વદર્શનીય બનાવવાના સંકલ્પને સિદ્ધ કરવા એમ. ડી. એચ.ના સ્વામી મહાશય ધર્મપાલજીએ શિલાન્યાસ કર્યો.

આર્યાવર્ત કેસરીના સમ્પાદક ડૉ અશોક આર્યના પ્રચારને કારણે આ વર્ષે અમરોહા (ઉત્તર પ્રદેશ)થી લગભગ પાંચસો ઋષિભકતોનો સમૂહ ઋષિબોધોત્સવમાં ભાગ લેવા પધાર્યો હતો. વિગત ઘણા વર્ષોથી ડૉ અશોક આર્યના નેતૃત્ત્વમાં મોટી સંખ્યામાં દરવર્ષે ઋષિભકતો ટંકારા પધારે છે પણ આ વર્ષે તેમનો પુરુષાર્થ સાચે જ રંગ લાવ્યો છે. ઉપરાંત બીજા પણ અનેક સ્થાનેથી વિશેષ વાહનો દ્વારા ઋષિભકતો મોટી સંખ્યામાં પધાર્યા હતા.

ઋષિભકતો માટે સવારે પાંચ વાગે ચહા, છ વાગ્યાથી ચહા અને નાશ્તો, બપોરે અને રાત્રે જમવાની વ્યવસ્થા, સાંજે ચહા વિગેરે પુરતા પ્રમાણમાં મળી રહે તે જોવાની વ્યવસ્થા વયોવૃદ્ધ ટ્રસ્ટી શ્રી લધાભાઈ પટેલના માર્ગદર્શનમાં આર્યસમાજ રાજકોટના શ્રી રણજિતસિંહ પરમાર અને આર્યસમાજ ભૂજના શ્રીમતી ભાનુબહેન અને શ્રી મહેશભાઈની આગેવાનીમાં આવેલ આર્યવીરો અને વીરાંગનાઓએ હસતા મોંઢે વ્યવસ્થા સંભાળી હતી તેઓને ધન્યવાદ અપાય તેટલા ઓછા છે.

છેલ્લે ટંકારા ગુરુકુલના આચાર્યજીના માર્ગદર્શનમાં ગુરુકુલના અધ્યાપકો અને બ્રહ્મચારિઓએ રાત-દિવસ જોયા વિના માથા પર બરફ રાખીને ઋષિભકતોની બધીજ સમસ્યાઓનું સમાધાન કરવાના પ્રયત્નો કર્યા છે.

આટલો મોટો મહોત્સવ શ્રદ્ધાળુઓની હાજરી વિના ફીક્કો હોત તો સહુ કાર્યકર્તાઓના સમર્પણ વિના અધુરો હોત દરેકને જેટલા ધન્યવાદ આપીએ તેટલા ઓછા છે.

महर्षि जन्मोत्सव व बोधोत्सव सम्पन्न

आचार्य श्रीमती अनीता गौतम वैदिक विद्वान् आचार्य भद्रकाम जी का तुलसी का पौधा देकर सम्मान करती हुई

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर-14, फरीदाबाद में आर्य समाज के प्रवर्तक, प्रखर देशभक्त, वेदों के काव्यकार युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का 196वाँ जन्मदिवस तथा बोधोत्सव बड़ी श्रद्धा व उल्लास से मनाया गया। इसकी अध यक्षता विद्यालय की आचार्या श्रीमती अनीता गौतम जी ने की और मुख्यवक्ता प्रसिद्ध आर्योपदेशक व वैदिक विद्वान आचार्य भद्रकाम जी वर्णी थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ विद्यालय के संगीत विभाग के अध्यापकों व बच्चों ने ईश्वरभक्ति व ऋषि दयानन्द भक्ति पूरक भजनों को श्रद्धापूर्वक गाया। पुनः आचार्य श्री भद्रकाम जी वर्णी ने महर्षि के जीवन की विभिन्न घटनाओं व नैतिक कथाओं के माध्यम से शिक्षकों को समझाया, साथ ही डी.ए.वी. का महत्व तथा कार्यो का वर्णन करते हुए शिक्षकों को सर्वोच्च सम्मान प्राप्ति का अधिकारी बताया।

अन्त में विद्यालय की आचार्या ने अपने अध्यक्षीय भाषण में समस्त भारतीयों को ऋषि का ऋणी बताया और सब शिक्षकों को डी.ए.वी. का कार्यकर्ता होने पर सौभाग्यशाली बताया। कार्यक्रम के अन्त में शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण किया गया।

शोक समाचार

आपने अपना जीवन प्रतिपल अपने अंदर पीयुषरूप गुण का धारण करके शुद्ध सन्देश देती रही। महर्षि दयानन्द के कार्यो को पूर्ण करने की भावना आपके मन में सदैव रही। आपके अकस्मात् निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत् को आघात पहुंचा है। लेकिन आपकी शुद्धमूर्ति चिरकाल तक हमारे हृदयों को आपके सत्कर्मो की सुंगध से आलोकित करती रहेगी।

आप श्री अरूण अब्रोल (ट्रस्टी महर्षि दयानन्द सरस्तवी टंकारा, मन्त्री मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा, अन्तरंग सदस्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) की पत्नी थी और निरंतर अरूण जी की ख्याति और ऋषि मिशन के कार्यो में जो आप सफलता पूर्वक कार्य कर सके उसके पीछे आपके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

टंकारा ट्रस्ट परिवार की ओर से परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि उपरोक्त को सद्गति प्रदान करें।

प्रवेश सूचना

श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा में

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा (गुरुकुल) में प्रवेश प्रारम्भ है। विद्यालय में अष्टाध्यायी, वेद, दर्शनशास्त्र आदि पढ़ने की उत्तम व्यवस्था है। सुविधा युक्त आवास, पौष्टिक भोजन, प्रातराश आदि के साथ गुरुकुलीय अनुशासन है। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) के आर्ष पाठ्यक्रम से मान्यता प्राप्त है। कक्षा सातवी और नौंवी उत्तीर्ण, स्वस्थ और चरित्रवान मेधावी छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेशार्थी समीप की आर्यसमाज के पदाधिकारी के पत्र तथा अपनी अंकशीट के साथ आवेदन करें।

आचार्य रामदेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द, अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

डाक टंकारा, जिला-मोरबी (सौराष्ट्र-गुजरात)-363650, मो. 09913251448

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 200/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 1000/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2020

दानवीर पदम्भूषण महाशय धर्मपाल जी की उपस्थिति

रामनाथ सहगल जी के 96वें जन्मदिवस पर आयोजित कार्यक्रमों की चित्रमय झलकियां

आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली

डी.ए.वी. मुख्यालय नई दिल्ली

(पृष्ठ 9 का शेष)

दल भुज), कु. विद्या पटेल (आर्य वीरांगना दल भुज), कु. विदुषी पटेल (आर्य वीरांगना दल भुज), श्री जयसुख भाई ओ. पटेल, श्रीमती उषा किरण (दिल्ली) आदि द्वारा टंकारा ट्रस्ट को दिये जा रहे सहयोग के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात सरकार ने अपने वक्तव्य में कहा कि मैंने गुजरात सरकार के राज्यपाल के रूप में शपथ लेने के उपरान्त सबसे पहले मैं अपने ऋषि की जन्म भूमि टंकारा में ही आया। तदुपरान्त में राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री जी को मिला तो मुझे प्रधानमन्त्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूछा कि ''क्या आप महर्षि दयानन्द जन्म भूमि टंकारा हो आये हैं तो मैंने कहा कि ''हाँ हो आया हूं।'' उन्होंने मुझे कहा कि ''आप ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त हैं और और आर्य समाज के दीवाने हैं। आपने ऋषि दयानन्द की महत्ता एवं गरिमा के अनुरूप उनकी जन्म भूमि नहीं बनाई।''

आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि टंकारा में ऋषि दयानन्द का स्मारक भव्य एवं विश्वस्तरीय होना चाहिए। गुजरात सरकार इस कार्य में न्यास को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। उन्होंने कहा कि महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के निष्ठावान भक्त हैं। वे 97 वर्ष की आयु में ऋषि मिशन को पूर्ण करने में तन-मन-धन से लगे हुए हैं और इस अवस्था में भी वे टंकारा पधारे हैं। उन्होंने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विनय आर्य की प्रशंसा की कि वे महाशय धर्मपाल जी का ध्यान रखते हैं। राज्यपाल महोदय ने कहा कि आज महाशय धर्मपाल जी ने ऋषि दयानन्द जन्मभूमि न्यास टंकारा को दो करोड़ की राशि जन्म स्थान को विश्वदर्शनीय बनाने हेतु देने की घोषणा की है। आचार्य देवव्रत जी ने टंकारा ट्रस्ट को रूपये 11 लाख की राशि कोष से देने की घोषणा भी की।

रात्रि सत्र में श्रद्धांजलि सभा श्री योगेश मुंजाल जी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई जिसमें डॉ. सुकृति माथुर व अविरल माथुल जी द्वारा संगीतमय प्रस्तुति दी गई जिसमें ऋषि भक्ति के भजन एवम् गीत थे। यह सत्र रात्रि 11.30 बजे तक चला। सभी उपस्थित जनसमूह ने इस पति-पत्नी के कार्यक्रम की भरपुर प्रशंसा की।

सभी बीमारियों का उपचार
योग और स्वस्थ जीवन शैली में निहित है

टंकारा समाचार अप्रैल 2020
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-04-2020
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.03.2020

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय